विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – अष्टम दिनांक -25 - 09 - 2021

विषय -हिन्दी विषय शिक्षक - पंकज कुमार

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज नमक का दरोगा नामक शीर्षक के बारे में अध्ययन करेंगे।

1. निषेद – मनाही
2. सुख -संवाद – सखु देनेवाला समाचार
3. कानाफूसी – धीरे धीरे बात करना
4. अविचलित – स्थिर
5. विस्मित – हैरान
6. तजवीज – सुझाव
7. प्रवबल्य -प्रधानता
8. बरकत – तरक्की
9. संकुचित – छोटा – सा
10. आत्मावलम्बन – खुद पर भरोसा करने वाला
11. शूल – अत्याधिक पीड़ा
12. अगाध – गहरा
13. कगारे पर का वृक्ष – वृद्धावस्थ

पराजित हृदय, शोक और खेद से व्यथित अपने घर की ओर चल पड़े। घर पहुँचे तो पिताजी ने कड़वीं बातें सुनाई। वृद्धा माता को भी दुःख हुआ। पत्नी ने कई दिनों तक सीधे मुँह तक बात नहीं की। एक सप्ताह बीत गया। संध्या का समय था। वंशीधर के पिता राम-नाम की माला जप रहे थे। तभी वहाँ एक सजा हुआ एक रथ आकर रुका। पिता ने देखा पंडित अलोपीदीन हैं। झुककर उन्हें दंडवत किया और चापलूसी भरी बातें करने लगे, साथ ही अपने बेटे को कोसा भी। पंडितजी ने बताया कि उन्होंने कई रईसों और अधिकारियों को देखा और सबको अपने धनबल का

गुलाम बनाया। ऐसा पहली बार हुआ जब कोई व्यक्ति ने अपनी कर्तव्यनिष्ठा द्वारा उन्हें हराया हो। वंशीधर ने जब पंडितजी को देखा तो स्वाभिमान सहित उनका सत्कार किया। उन्हें लगा की पंडितजी उन्हें लज्जित करने आए हैं। परन्तु पंडितजी की बातें सुनकर उनके मन का मैल मिट गया और पंडितजी की बातों को उनकी उदारता बताया। उन्होंने पंडितजी को कहा कि उनका जो हुक्म होगा वे करने को तैयार हैं। इस बात पर पंडितजी ने स्टाम्प

लगा हुआ एक पत्र निकला और उसे प्रार्थना स्वीकार करने को बोला। वंशीधर ने जब कागज़ पढ़ा तो उसमें पंडितजी ने वंशीधर को अपनी सारी जायदाद का स्थायी मैनेजर नियुक्त किया था। कृतज्ञता से वंशीधर की आँखों में आँसू

आ गए और उन्होंने कहा कि वे इस पद के योग्य नहीं हैं। इसपर पंडितजी ने मुस्कराते हुए कहा कि उन्हें अयोग्य व्यक्ति ही चाहिए। वंशीधर ने कहा कि उनमें इतनी बुद्धि नहीं की वह यह कार्य कर सकें। पंडितजी ने वंशीधर को

कलम देते हुए कहा कि उन्हें विद्यवान नहीं चाहिए बल्कि धर्मनिष्ठ व्यक्ति चाहिए। वंशीधर ने काँपते हुए मैनेजरी की कागज़ पर दस्तखत कर दिए। पंडित अलोपीदीन ने वंशीधर को ख़ुशी से गले लगा लिया।